गौवंश संरक्षण एवं संवर्धन

सनातनधर्मी गाय को परम्परा से माता मानते आये हैं, परन्तु गौ केवल सनातनधर्मी की माता ही नहीं अपितु 'गावो विश्वरूस मातरः' – गौएँ समस्त विश्व की माता है। गाय समान रूप से विश्व के मानव मात्र का पालन करने वाली मॉ है। गो के शरीर में तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। एक गाय की पूजा करने से स्वयमेव करोड़ों देवताओं की पूजा हो जाती है। 'माता सर्वभुतानाम् गाय सर्वसुखप्रदाः' – गाय सब प्राणियों की माता है और प्राणियों को सब प्रकार के सुख प्रदान करती है।

गाय का धार्मिक, सांस्कृतिक महत्व

ऋग्वेद ने गाय को 'अघन्या' कहा है। यजुर्वेद कहता है, 'गोःमाता न विद्यते' अर्थात्र 'गो अनुपमेय है'। अथर्ववेद में गाय को 'धेनुः सदनम् रयीणम्' अर्थात गाय संपत्तियों का घर है' कहा है। अमृतपान से ब्रह्मा जी के मुख से फेन निकला, उससे गौएं उत्पन्न हुई और गोदुग्ध से क्षीर सागर बना। समुद्र मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति हुई। ब्रह्माण्ड पुराण में भगवान व्यासदेव ने गो–सावित्रीस्तोत्र में कहा, 'समस्त गौएं साक्षात विष्णु रूप है, उनके सम्पूर्ण अंगों में भगवान केशव विराजमान रहते हैं। पद्मपुराण का कथन है, 'गौ के मुख में पडङ्ग ओर पदक्रम सहित चारों वेद रहते हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार गौ सर्वदेवमयी ओर वेद सर्व गोमय है।' महाभारत में कहा है, 'अंगों और मंत्रों सहित समस्त वेद हर्षित होकर नाना प्रकार के मंत्रों से गौ की स्तुति करते हैं। ब्रह्मा–विष्णु–महेश कामधेनु की स्तुति निम्न प्रकार करते हैंः त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च मत्तस्य करणम्। त्वं तीर्थ तीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानंघे। भगवान कृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ, जिससे आगे चलकर संसार उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। श्रीकृष्ण गो सेवा से जितने शीघ्र प्रसन्न होते हैं, उतने अन्य किसी सेवा से नहीं। गणेश भगवान का सिर कटने पर महादेव का नाम एक गाय रखा गया और वही पार्वती को देनी पड़ी।

हम जानते हैं कि भगवान राम के पूर्वज महाराज दिलीप नन्दिनी गाय की पूजा करते थे और उसके पीछे–पीछे घूमते थे। एक बार सिंह ने उनकी गाय पर आक्रमण कर दिया। महाराज दिलीप ने गाय को छोड़ने के बदले सिंह को अपना शरीर अर्पण कर दिया। भगवान परीक्षा ले रहे थे, जिसमें महाराज दिलीप उत्तीर्ण हुए और उनका सन्तान की प्राप्ति हुई। इसी से उनका वंश चला और हमको भगवान राम जैसे महापुरूष की प्राप्ति हुई

भगवान श्रीकृष्ण का एक सर्वप्रिय नाम गोपाल है। वे नंगे पांव गायों को चराते थे। इन्द्र के प्रकोप को टालने के लिये उन्होंने ग्वालों को साथ लेकर गोवर्धन पर्वत को उठाकर गोवंश और समाज की रक्षा की। भगवान माखन चोर कहलाते हैं। वे न केवल स्वयं माखन खाते थे। अपने ग्वालबालों को भी खिलाते थे।

भगवान भोलेनाथ शिव का वाहन नन्दी, कहते हैं। भारत के दक्षिण की ओंगोल नस्ल का सांड था। जैन आदि तीर्थकर भगवान ऋषभदेव का चिन्ह बैल था।

सब ओर शिव मंदिरों में नन्दी की मूर्ति रहती है, जो भगवान शिव के मन्दिर के सामने उनकी ओर मुंह किए रहती है। भगवान कृष्ण अपनी बांसुरी से न केवल गौओं को रिझाते थे, बल्कि दूध निकालने के समय भी उनको बांसुरी की धुनें सुनाते थे। आजकल गो दुग्ध लेते समय संगीतवादन उसी परम्परा का एक भाग है।

प्राच्य जगत में हिन्दुओं की गो पूजा के समान ही पारसी लोग सांड की पूजा करते थे। वहां के प्राचीन सिक्कों पर तथा पिरामिड में बैलों की मूर्तियां अंकित है। इजिप्शियन चित्र लेखों में 2885 में पूर्ण गो पुराण का अनुवाद हुआ। ईस्वी पूर्व छठी शताब्दी से भारत के स्वतंत्र होने तक गौ और वृषभ प्रायः अधिकांश शासकों के सिक्कों पर अंकित रहते थे।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में चारों फल गाय के चार थन है। संत एकनाथ भागवत धर्म में गो सेवा का विशेष स्थान बताते है। महात्मा नामदेव ने दिल्ली के बादशाह के आह्वान पर मृत गाय को जीवन दिया। शिवाजी महाराज को समर्थ रामदास की कृपा से 'गो ब्राह्मण प्रतिपालक' उपाधि प्राप्त हुई। दशम गुरू गोविन्दसिंह ने 'चण्डी दीवार' में दुर्गा भवानी से गो–रक्षा की मांग की है यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊॅ। गऊघात का दोष जग सिर मिटाऊं। उन्होंने यह भी कहा : यही आस पूरन करो तु हमारा, मिटे कष्ट गौअन, छटै खेद भारी।

भगवान बुद्ध को गया के पास उस क्षेत्र के सरदार की बेटी सुजाता द्वारा गायों के दूध की खीर खाने के तुरन्त ज्ञान और मुक्ति का मार्ग मिला। गाय को वे मनुष्य की परममित्र 'गावों नो परमा मित्ता' कहते हैं। जैन आगमों में कामधेनु को स्वर्ग की गाय कहा है और प्राणी मात्र को अवध्या माना है। भगवान महावीर स्वामी के अनुसार 'गौ रक्षा बिना मानव रक्षा संभव नहीं।' पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने कहा है, 'गाय का दूध रसायन, गाय का घी अमृत तथा मांस बीमारी है।' साथ ही 'गाय दौलत की रानी है।' ईसा मसीह ने कहा है, 'एक बैल को मारना, एक मनुष्य को मारने के समान है।'

आधुनिक महापुरूषों ने भी गौ के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती 'गो करूणा निधि' में कहते है, 'एक गाय अपने जीवनकाल में 4,20,440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है, जबकि उसके मांस से 80 मांसाहारी केवल एक समय अपना पेट भर सकते है।' महात्मा गांधी ने कहा है, 'गोवंश की रक्षा ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। भारत की सुख–समृद्धि गौ के साथ जुड़ी हुई है। गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है।'

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा था कि 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कलम की एक नोक से पूर्ण गोहत्या बन्द कर दी जाएगी।' चाहे तुम मुझे माद डालो, पर गाय पर हाथ न उठाओं। प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था, 'भारत में गौपालन सनातन धर्म है।' पूज्य देवराहा बाबा कहते थे, 'जब तक गोमाता का रूधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठान सफल नही होगा।' हनुमान प्रसाद पोद्दार कहते हैं, 'जब तक भारत की भूमि पर गो रक्त गिरेगा, तब तक देश सुख–शांति और धन–धान्य से वंचित रहेगा। जयप्रकाश नारायण जी कहते थे, हमारे लिये गोहत्या बन्दी अनिवार्य है।'

गाय का वैज्ञानिक महत्व :–

1. गाय के दूध में रेडियो विकिरण (एटामिक रेडिएशन) से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है, ऐसा रूसी वैज्ञानिक शिरोविच कहते हैं।
2. गाय कैसा भी तृण पदार्थ, यहां तक कि विषैला भी खाए, उसका दूध तब भी निरापद एवं शुद्ध होता है।
3. जिन घरों में गाय के गोबर से लिपाई–पुताई होती है, वे घर रेडियो विकिरणों से सुरक्षित रहते हैं।
4. गाय का दूध ह्रदय रोग से बचाता है।
5. गाय का दूध शरीर में स्फूर्ति, आलस्यहीनता तथा चुस्ती लाता है।
6. गाय का दूध स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।
7. गाय के घी को अग्नि पर डालकर धुआं करने अथवा इससे हवन यज्ञ करने से वातावरण 'एटामिक रेडिएशन से बचता है।
8. गाय एवं उसकी सन्तान के रंभाने की आवाज से मनुष्य की अनेक मानसिक विकृतियां एवं रोग स्वयमेव दूर हो जाते हैं।
9. मद्रासी डा. किंग की खोज के अनुसार गाय के गोबर में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है।
10. क्षय रोगियों को गाय के बाड़े या गौशाला में रखने से गोबर और गोमूत्र की गंध से क्षय रोग के कीटाणु मर जाते हैं।
11. एक तोला घी से यज्ञ करने पर एक टन ऑक्सीजन बनता है।
12. रूसी शोध के अनुसार कत्लखानों से भूकम्प की आशंकाएं बढ़ती हैं।
13. गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है, जो सूर्य के प्रकाश में जागृत होती है। नाड़ी के जागृत होने पर वह पीले रंग का पदार्थ छोड़ती है। अतः गाय का दूध पीले रंग का होता है। यह केरोटिन तत्व सर्वरोग नाशक सर्व विष विनाशक होता है।

14. गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने पर अत्यन्त महत्वपूर्ण गैसें, जैसे इथीलीन आक्साइड, प्रोपलीन आक्साइड आदि बनती है। इथीलीन आक्साइड गैस जीवाणु रोधक होने के कारण ऑपरेशन थियेटर से लेकर जीवन रक्षक औषधि बनाने के काम आती है। वैज्ञानिक प्रोपलीन आक्साइड गैस कृत्रिम वर्षा का आधार मानते हैं।

गाय का अर्थिक महत्व :–

- ❖ राष्ट्रीय आय में प्रतिवर्ष बड़ा भाग (6 से 7 प्रतिशत) पशुधन से प्राप्त होता है।
- ❖ 40 हजार मेगावाट अश्व शक्ति पशुधन से प्राप्त होती है।
- ❖ 5 करोड़ टन दूध प्रति वर्ष पशुधन से प्राप्त होता है और अब तो भारत सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश हो गया है।
- ❖ लाखों गैलन गोमूत्र (कीट नियंत्रक) गोवंश से प्राप्त होता है।
- ❖ राष्ट्र की कुल विद्युत शक्ति का लगभग 70 प्रतिशत पशु शक्ति से प्राप्त हो सकता है।
- ❖ एक गोवंशीय प्राणी के गोबर से बनी केवल नाडेप खाद का मूल्य न्यूनतम 20 हजार रूपये होता है।
- ❖ गोवंश न केवल उत्तम दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी देता है, बल्कि औषधियों और कीट नियंत्रकों का आधार गोमूत्र देता है। साथ ही उत्तम जैविक खाद का स्त्रोत गोबर देता है।
- ❖ भारतीय गोवंश से खेती के आधार उत्तम बैल प्राप्त होते हैं। अभी भी 70 प्रतिशत खेती में हल चलाने का काम बैलों से लिया जाता है।
- ❖ बैल भार ढोने के काम भी आते हैं। उनसें भारतीय रेलों की अपेक्षा अधिक यातायात का काम लिया जाता है।
- ❖ भारतीय गोवंश के मूत्र ओर गोबर से लगभग 32 औषधियों का निर्माण किया जा रहा है। उनमें से काफी औषधियां महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि सरकारों से मान्यता प्राप्त है।
- ❖ गोमूत्र, गोबर, दूध, छाछ आदि से मनुष्योपयोगी दवाओं के निर्माण केन्द्र देवलापार नागपुर के अनुसंधान केन्द्र को नागपुर स्थित भारतीय शोध संस्थान नीरी द्वारा शोध संस्थान के तौर पर मान्यता दी गई है।
- ❖ भारत की खेती हमारे गोवंश पर और गोवंश भारतीय खेती पर निर्भर है। एक के बिना दूसरे की उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती। वैज्ञानिक चकाचौंध में भारतीय गोवंश का भारत के मुख्य धंधे खेती में उपयोग को भुलाया जा रहा है।

- ❖ गोमूत्र में तांबा होता है, जो मनुष्य के शरीर में पहुंच कर स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। स्वर्ण में सर्वरोगनाशक शक्ति होती है।
- ❖ बुलन्दशहर में बैल चालित ट्रैक्टर का निर्माण हुआ है। किसान बैठकर खेती के अनेक कार्य कर सकेगा ओर आयातित डीजल की आवश्यकता नहीं होगी।
- ❖ गोमूत्र में अनेक रसायन होते हैं, जैसे नाइट्रोजन, कार्बोलिक एसिड, दूध देती गाय के मूत्र में लेक्टोज, सल्फर, अमोनिया गैस, कापर, पोटैशियम, मैंगनीज, यूरिया, साल्ट तथा अन्य कई क्षार, आरोग्यकारी अम्ल आदि होते हैं।
- ❖ गाय के गोबर में 26 प्रकार के उपयोगी खनिज पाए जाते हैं।
- ❖ आज के प्रदूषण की विकट समस्या डीजल, पेट्रोल, कार्बन डाइऑक्साइड के कारण पैदा होती है। इसका एक हल गोबर–गोमूत्र तथा वनस्पतियों का उपयोग बढ़ाना है।
- ❖ मरे हुए पशु के एक सींग में गोबर भरकर भूमि में दबाने के कुछ समय के उपरान्त ही एक एकड़ भूमि के लिये सींग या अणु खाद प्राप्त होता है।
- ❖ मरे हुए पशु के शरीर को भूमि में दबाने से कुछ मांस में समाधि खाद मिलता है, जो कई एकड़ भूमि के लिये उपयोगी होता है।
- ❖ गोमूत्र में आक, नीम या तुलसी आदि उबालकर कई गुना पानी में मिलाकर बढ़िया कीट नियंत्रक बनते हैं।
- ❖ गोबर का खाद धरती का प्राकृतिक आहार है। इससे धरती की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। ऐसा भारत में हजारों वर्ष से होता आया है। इसके विपरित रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से धरती की उर्वरा शक्ति घटकर बंजर होने के कगार पर पहुंच गयी है।
- ❖ बायो–गैस (जैविक खाद संयंत्र) ने मध्यप्रदेश के ग्राम मोहद, जिला नरसिंहपुर में नई क्रांति को जन्म दिया है। गैस ईधन और चालक शक्ति के तौर पर प्रयोग हो रहा है।

गोबर से बिजली का निर्माण हो सकता है :–

- ➢ भारत में 48 करोड़ एकड़ कृषि योग्य भूमि है। प्रति एकड़ भूमि को पांच टन जैविक खाद चाहिये अर्थात कुल 240 करोड़ टन। घट गये गोवंश से केवल 40 करोड़ टन गोबर खाद उपलब्ध है, जिसमें से 30 प्रतिशत 12 करोड़ टन जलाने में आ जाता है। शेष बचा 28 करोड़ टन। वर्तमान पद्धति से गोबर सूखने पर केवल 6 करोड़ टन गोबर गैस मिलेगा। नेडप कम्पोस्ट खाद पद्धति से एक किलो गोबर से तीस किलो तक खाद मिलेगा। हमारी आवश्यकता की पूर्ति इस जैविक पद्धति की खाद से हो सकती है।

- नेडप काका (नारायणदेव पांढरी पांडे) तीन देसी गायों को पालकर वार्षिक लगभग 2 लाख 46 हजार रूपये केवल गोबर के उत्पाद से प्राप्त करते हैं, जिसमें साबुन, अंगराग पाउडर, कम्पोस्ट खाद, दीवार रंग, धूपबत्ती आदि सम्मिलित है। नेडप कम्पोस्ट खाद को महाराष्ट्र व राजस्थान सरकारों के कृषि विभाग व आई. आई. टी. – दिल्ली, आई. पी. सी. एल. – बड़ौदा ने मान्यता प्रदान की है।
- देवलापार नागपुर स्थित गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र में 143 गोवंश पर आधारित उत्पादों से 50 परिवारों को रोजगार मिल रहा है। यहां पर किये जा रहे सफल अनुसंधानों के परिणाम से कई असाध्य रोगों की प्रभावी चिकित्सा संभव हुई है।
- पंचगव्य आयुर्वेद व गोवंशाधारित कृषि तंत्र को अपनाने से देश के सभी गांवों में रोजगार मिल सकेगा। इससे पर्यावरण व जनस्वास्थ्य भी सुरक्षित रहेगा।
- विदर्भ (नागपुर के आसपास) के सूचीबद्ध किसान जैविक खेती कर रहे हैं।
- महाराष्ट्र के मनोहरराव परचुरे, एडवोकेट, भास्कर हरि सावे, आनन्दराव सूबेदार, मोहनशंकर देशपाण्डे, अशोक संघवी जैसे बड़े–बड़े किसान (सौ–सौ एकड़ से अधिक भूमि पर) जैविक खेती कर रहे हैं।
- कर्नाटक, गुजरात, मध्यप्रदेश में जैविक खेती निरन्तर प्रगति पर है। गोबर से बने जैविक खाद ओर गोमूत्र से बने कीटनियंत्रकों का ही प्रयोग हो रहा है।
- गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर व अन्य ऐसी ही सफल प्रयोगों से सिद्ध हो गया है, कि महात्मा गांधी के चरखा आन्दोलन से भी अधिक प्रभावी रोजगार व ग्रामीण तथ्यों के आधार पर दूध देने वाला गोवंश स्वावलम्बन का साधन है।

गोरक्षा – हमारा दृष्टिकोण एवं प्रयास :–

- गोवंश के महत्व को विभिन्न पहलुओं से हमने समझा है। इसकी रक्षा, परिपालन एवं सर्वधन इन तीन पहलुओं पर थोड़ा ध्यान करने से हमारा दृष्टिकोण भी स्पष्ट होगा, साथ ही किये गये प्रयास ध्यान में आयेंगे, कुछ नया करने का संकल्प भी हम संजो पाये तो प्रयास सार्थक होगा।
- हमारी दृढ धारणा है, कि केवल गो माता ही नहीं, संपूर्ण गोवंश की रक्षा होनी चाहिये। गोवंश को कटने से बचाना चाहिये। कत्लखाने एवं यान्त्रिक वध शालाऐं बन्द होनी चाहिये। मांस निर्यात पर प्रतिबंध लगना चाहिये। हमारी गोवंश की कल्पना पश्चिम से भिन्न है। हम गाय दूध, दही, घी, लस्सी, मक्खन के लिये तथा बैल हल चलाने एवं बोझ ढोने के लिये तथा दोनों को उनके गोबर और गोमूत्र के लिये पालते हैं। पश्चिम में गोवंश कृषि के लिये उपयोग नहीं होता। वहां दो प्रकार की गौएं पाली जाती हैं –

एक दूध के लिये तथा एक मांस के लिये। दूध के लिए जर्सी, होलस्टेन आदि नस्लें है, जबकि मांस के लिये पाली जाने वाली गौओं को मोटा–ताजा बनाया जाता है।

- ❖ हमारे गोवंश का मुख्य उत्पाद गोबर तथा गोमूत्र है, जो भारतीय कृषि के लिये उत्तम जैविक खाद तथा बढ़िया कीट नियंत्रक निर्माण तथा भूमि की उर्वरता बनाये रखने एवं बढिया फसलें प्राप्त करने के लिये आवश्यक है। भारतीय गोवंश जीवन भर अनुत्पादक नहीं होता। मरने के बाद भी मनुष्य को अनेक प्रकार के लाभ देता है। जीते जी गोवंश गोबर–गोमूत्र देता है, जो खेती के लिये बहुत आवश्यक और किसान के लिये उपयोगी होते है। इन्ही के उपयोग से उन पर होने वाले व्यय से कई गुना आय प्राप्त हो सकती है।
- ❖ भारत में गोवध मुसलमान शासकों के आने से और विशेषकर अंग्रेजों की हुकूमत होने पर प्रारंभ हुआ। पहले गोवध नाम को भी नहीं था। यहां के मुसलमानों ने भी उस समय गोवध न के बराबर किया। मुगल बादशाहों ने कानूनन अपराध बनाया था। अंग्रेजों के आने के बाद, विशेषकर अपने राज्य की नींव पक्की करने के लिये जब उन्होंने मुसलमानों ओर हिन्दूओं को लड़ाने और उनमें वैर भाव उत्पन्न करने के लिये हिन्दूओं द्वारा माता मानी जाने वाली गौ का वध करने के लिये मुसलमानों को अधिकाधिक उकसाया। इससे हिन्दूओं और मुसलमानों में विरोध बढ़ता गया।
- ❖ जस्टिस कुलदीप सिंह की बैंच के सामने जब बंगाल का केस आया तो मुसलमानों से प्रमाण मांगा गया कि उनके किस ग्रन्थ में बकर–ईद पर भी गोवध करना अनिवार्य बताया गया है। कोई प्रमाण न दिये जाने पर न्यायमूर्ति ने निर्णय दिया कि बकर–ईद पर गोहत्या नहीं हो सकती। परन्तु वहां की सरकार उच्चतम न्यायालय की खण्डपीठ के निर्णय का भी पालन नहीं करवा रही है। कलकत्ता में गोरक्षकों को गिरफ्तार किया जाता है। गोहत्यारों को बकर–ईद पर गोहत्या करने की खुली छूट दी जाती है। केरल में तो गोरक्षा का कोई कानून ही नहीं है। भारत में यही एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां गोरक्षा का कोई कानून नहीं है।

गोवंश रक्षण :–

- ➢ गोरक्षा कार्य के तीन प्रमुख पहलू हैं। उसमें प्रथम है, गौओं की रक्षा करना, उनको कत्लखानों में जाने से रोकना तथा मांस निर्यात बंद कराना।
- ➢ गोरक्षा स्वतंत्रा प्राप्ति पूर्व से इस देश में हो रहा है। इस संदर्भ में स्वामी करपात्री महाराज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, लाला हरदेव सहाय, जैन मुनि सुशील कुमार, जगदगुरू शंकराचार्य

स्वामी निरंजन देव तीर्थ, जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी कृष्ण बोधाश्रम, स्वामी रामचन्द्र वीर, आचार्य धर्मेन्द्र, आचार्य विनोबा भावे का नाम उल्लेखनीय है।

- गौमाता को बचाने के लिए पूज्य सन्तों, महन्तों, धर्माचार्यों के नेतृत्व में भारत के संसद भवन पर विशाल प्रदर्शन भी किया जा चुका है, जिसमें सैकड़ों गोभक्त शहीद हुए और हजारों घायल हो गये। यह प्रदर्शन उस समय का विशालतम प्रदर्शन था।
- गोरक्षा आन्दोलन को योजनाबद्ध ढंग से चलाने के लिये नई दिल्ली के कांस्टीटयूशन क्लब में न्यायमूर्ति गुमानमल लोढ़ा की अध्यक्षता में सभा हुई, जिसमें राष्ट्रीय गोरक्षा आन्दोलन समिति गठन किया गया। साथ ही सर्वसम्मति से पूर्ण गोवंश हत्या बन्दी का संकल्प लिया गया।
- सम्वत् 2053 के बाद से भारत के विभिन्न राज्यों में गौशालाओं का निर्माण हो रहा है। उदाहरणार्थ, केरल में जहां गोरक्षा का कोई कानून नहीं है, वहां भी नई गौशाला का निर्माण हुआ है। ऐसा ही हिमाचल में हुआ है। गौशालाओं तथा सनातनधर्मी बंधुओं द्वारा अधिकाधिक गोवंश रक्षा के प्रयास निरन्तर चल रहे हैं। इसके साथ ही जैन सन्तों द्वारा समाज को प्रेरणा देकर नई–नई गौशालाओं की स्थापना करवाई जा रही है।
- **जैन सन्तों द्वारा विशाल सम्मेलनों के माध्यम से मांस निर्यात बन्द करने का आह्वान किया जा रहा है। इस संबंध में महान तपस्वी, मेवाड़ देशोद्धारक परम पूज्य आचार्य देवेश श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी म.सा., आचार्य भगवंत प.पू. श्री राजशेखर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य भगवंत प.पू. श्री मद्विजयरत्नसुंदर सूरीश्वर जी म.सा., आचार्य भगवंत प.पू. श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी जी म.सा., पन्यास प्रवर प.पू. श्री पद्मभूषण विजय जी म.सा, पन्यास प्रवर प.पू. श्री निपुणरत्न विजय जी म.सा. तथा जैन संत तरूण सागर महाराज का प्रयत्न विशेष तौर पर सराहनीय है। इसके अलावा प्राणीमित्र, जीवदया प्रेमी, शासनरत्न परम् श्रद्धेय श्री कुमारपाल भाई वी. शाह, कलिकुण्ड–धोलका, अहमदाबाद (गुजरात) तथा श्रीमद् भागवत कथा वाचक मालवा संत श्री कमलकिशोर जी नागर, सेमली आश्रम, शाजापुर (मध्यप्रदेश) का प्रयास भी उल्लेखनीय है।**
- समाज द्वारा कत्लखानों, विशेषकर यांत्रिक कत्लखानों को बंद करने की मांग निरन्तर की जा रही है। कत्लखानों और मांस निर्यात को किसी भी प्रकार का अनुदान देना तुरन्त बंद करने की मांग हो रही है। दुर्भाग्य से 1 अप्रैल, 2000 से ओपन जनरल लाइसेंस के अधीन, गोदुग्ध, दुग्धोत्पादों, सेन्द्रीय खाद आदि का आयात भी होने लगा है।

- सौभाग्य से भारत सरकार ने इस प्रकार के आयातों पर 60 प्रतिशत आयात शुल्क लगाना तय किया है, ताकि भारत के इन उत्पादों द्वारा बाजार में विदेशी आयातों से सफल स्पर्धा की जा सके। वास्तव में भारत में इन वस्तुओं का आयात होना ही नहीं चाहिये।
- भरसक प्रयत्न करने पर भी गोवंश हत्या बन्द नहीं हो रही है, अपितु गोवंश हत्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। स्वामी विवेकानन्द कहते थे, ''यदि किसी समस्या को सुलझाना है, तो उसमें जड़ से सुधार करना चाहिये।'' स्वाधीनता के पूर्व और उसके पश्चात भी गोवंश हत्या की जड़ में विकृत सोच रही है। गोवंश हत्या को प्रोत्साहन देने वाली प्रशासनिक नीति बदलने की आवश्यकता है।
- भारत सरकार, यहां की राज्य सरकारें तथा न्यायालय भी ठीक विचार से नहीं चल रहें है। वे सोचते हैं कि गोवंश बूढ़ा होने पर दूध नहीं देता तथा हल चलाने ओर बोझ ढोने में अक्षम हो जाता है। अतः अनुपयोगी हो जाता है। यह सोच अत्यन्त विकृत है क्योंकि जीते जी गोवंश गोबर–गोमूत्र देगा ही उसके सदुपयोग से भारतीय कृषि लाभान्वित होने के अतिरिक्त मनुष्य का स्वास्थ्य भी सुधर सकता है।
- अतः केवल जीते जी ही नहीं, मरणोपरान्त भी गोवंश उपयोगी रहता है। उसके चमड़े, हडिड्यों, सींगों यहां तक कि सारे शरीर का ही उपयोग खेती के लिये हो सकता है। आजकल के विशेषज्ञों की यह सोच कि दूध न देने वाले गोवंश का वध करके तथा हल चलाने ओर बोझ न ढो सकने वाले बैलों का मारकर चारे की कमी को पूरा किया जा सकता है। ठीक नहीं है। गोवंश के मांस को खाद्यान्न पूर्ति हेतु उपयोग में लाना चाहिये। ये दोनो ही विकृत विचार है। यह विचार कि गोवंश के चरने से जंगलों की हानि होती है ठीक नहीं है। वास्तव में गोवंश के लिये अधिक चरागाह चाहिये।
- मांस निर्यात से आय की प्राप्ति ओर विदेशी मुद्रा की कमाई भी न्यायसंगत नहीं है। यह कहना कि गोवंश हत्या से देश को आर्थिक लाभ होता हैं और गोवंश हत्या इस कारण देश के हित में है और गोवंश हत्या रोकना देश के विरोध में है ठीक नहीं है। प्रशासनिक अधिकारी गोहत्या के पक्ष में इस प्रकार की दलीलें देकर गोवंश हत्या बद नहीं होने दे रहे। ऐसी दलीलें वास्तविकता के विरूद्ध है।

गोवंश परिपालन :–

- गोरक्षा का दूसरा प्रमुख पहलू है, गोवंश का ठीक परिपालन। गोवंश को ठीक चारा, दाना, पानी चाहिये। उनके लिये मनुष्य के समान सन्तुलित आहार आवश्यक है। उनके रहने का स्थानन स्वच्छ, साफ–सुथरा होना चाहिये। सर्दी, गर्मी में ठीक सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिये। एक गौ या बैल को बैठने ओर खड़ा होने का पर्याप्त स्थान चाहिये। उनको ठीक प्रकार से चारा–दाना खिलाने का प्रबंध करना चाहिये। पीने का पानी स्वच्छ और ठीक व्यवस्था के अनुसार हो।

- ❖ उनके लिये चारा भण्डार की ठीक व्यवस्था हो ताकि वर्ष भर चारे की कमी न हो। हरा चारा मिलना आवश्यक है। अलग आयु के बछड़े–बछडियों के रहने और खाने का प्रबंध अलग–अलग होना चाहिये। दूध देने वाली और दूध न देने वाली गौओं की व्यवस्था अलग से हो। बैलों और सांडो की व्यवस्था भी अलग हो। बीमार गौओं का प्रबंध अलग करके उनके लिये ठीक डॉक्टरों और दवा की व्यवस्था होनी चाहिये।
- ❖ संक्रामक रोगों की रोकथाम ओर संरक्षण का ठीक प्रबंध होना चाहिये। पशुओं को ठीक समय पर टीके लगने चाहिए। गलघोंटू, गिल्टी, अनेक प्रकार के बुखार, मुंहपका, खुरपका बीमारियों का ठीक उपचार, पोका–पोंकनी (रिण्डरपेस्ट) आदि रोगो का ठीक निदान ओर इलाज ठीक समय से होना चाहिये। बीमारी की हालत में पशु के मुंह से लार अन्य पशुओं को न छुए। संसर्गी गर्भपात से भी पशु की रक्षा होनी चाहिये। बीमार पशुओं और स्वस्थ पशुओं के बर्तन भी अलग– अलग रहने चाहिए।
- ❖ भारतीय गोवंश के चरने के लिये गोचर भूमि की व्यवस्था आवश्यक है। खुले में चराई से गोवंश के पालने का खर्च कम हो जाता है और वह प्रसन्न रहता है। चरागाह में चरने से उसके दूध की मात्रा बढ़ जाती है। चरागाहों की व्यवस्था साफ सुथरी हो। पालक वहां गन्दगी लेकर न जाएं। आज देश के चरागाह नष्ट प्राय हो गए हैं। उनका कुछ वैकल्पिक उपयोग करना ठीक नहीं है। चरागाहों के स्थान पर उद्योगों का खड़ा होना या आवासीय मकान बनाना ठीक नहीं है।
- ❖ गौवंश के गोबर का पूर्ण उपयोग करने के लिये आवश्यक आकार के गोबर गैस संयंत्र लगने चाहिये। गैस का ईधन, चालक शक्ति और बिजली निर्माण के लिये ठीक उपयोग होना चाहिये। गैस निकली स्लरी खाद निर्माण के लिये पूर्ण गोबर की अपेक्षा अधिक उपयोगी होती है। गैस से चूल्हे जलाए जा सकते हैं। चारा काटने की मशीनें चलाई जा सकती हैं। सामान्य यंत्रों की सहायता से छोटे पैमाने पर बिजली निर्माण करके आसपास के क्षेत्र में बिजली की कमी की कुछ मात्रा में पूर्ति की जा सकती है।
- ❖ देसी खाद तैयार करके रासायनिक खादों की हानियों से बचा जा सकता है। इस खाद से भूमि बंजर होती जाती है, और हर बार खाद की अधिक आवश्यकता होने से फसल की लागत बढ़ती जाती है। इन खादों के उपयोग से अधिकाधिक कीड़ों के प्रकोप से बचने के लिये महंगे कीटनाशक डालने पड़ते हैं। इन दोनों के उपयोग से उत्पादों में विष बढ़ता जाता है और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक सिद्ध होता है। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के उपयोग के कारण भारतीय माता के दूध में भी 20 प्रतिशत से अधिक विष आ गया है। आगामी पीढियों की स्थिति का इससे अनुमान किया जा सकता है।

- ❖ गोमूत्र संसार का सर्वोत्तम कीट नियंत्रक है, खाद भी है। गोमूत्र में आक, नीम, तुलसी आदि के पत्ते डालकर उससे बढ़िया कीट नियंत्रक तैयार किये जा सकते हैं। गोमूत्र में कई गुना पानी मिलाकर भी उसे फसलों पर छिड़कने से उत्पादन उसकी गुणवत्ता में बहुत लाभ होता है। विष रहित स्वस्थ फसलें प्राप्त होती है और औषधियों का अनावश्यक खर्च बच जाता है।
- ❖ गोबर–गोमूत्र से सभी पेट की व्याधियों का सफल उपचार होता है। कैंसर, ह्रदय रोग, गुर्दे रोग, टी. बी. जैसी भीषण बीमारियों का इलाज हो रहा है। गोमूत्र स्वस्थ ओर देसी गाय का गंगाजल के समान है। सबसे बढ़िया गोमूत्र कंवारी बछड़ी का होता है। उसको कपड़े की आठ तहों में छानकर कांच की बोतल में रखना चाहिए।
- ❖ इस देश में गोवंश सम्पन्नता का द्योतक रहा है। अधिक गोवंश का पालक अधिक धनाढ्य माना जाता था। एक–एक सम्पन्न व्यक्ति के पास लाखों गौएं होती थी। गोदान सबसे श्रेष्ठ दान माना गया। वैतरणी पार करने के लिए भी गोमाता ही एकमात्र सहारा मानी गई, अन्त में उसी की पूंछ पकड़कर उद्धार होता था।

भारतीय गोवंश संवर्धन :–

- ➢ गोरक्षा की तीसरा प्रमुख पहलू है कि भारतीय गोवंश की नस्ल सुधारी जाए। बिना नस्ल सुधारे गोवंश की रक्षा का प्रयत्न विफल हो सकता है। नस्ल सुधार के लिये विदेशी नस्लों से भारतीय नस्ल का संकरीकरण पूरी तरह रोक देना चाहिये, क्योंकि हमारी गाय (गोवंश) के गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, लस्सी, मक्खन और घी में जो गुण होते हैं, वे विदेशी नस्लों में नहीं होते। अपनी ही नस्लों का क्रॉस ब्रीडिंग करके अपने गोवंश में और सुधार किये जाने की संभावना है। गोवंश जैसा है, उसकी रक्षा आवश्यक है। साथ ही गोवंश की नस्ल सुधारकर देसी गौओं का दूध बढ़ाया जा सकता है। संभवतः एक ही ब्यांत में पूरी सफलता नहीं मिलेगी। दो तीन चार ब्यांतों तक निरन्तर प्रयत्नशील रहना होगा।
- ➢ भारत की गाय को बदनाम किया जा रहा है, कि वह दूध बहुत कम देती है। वास्तव में हमने ही गौ की अवहेलना की है। भारत के गुजरात राज्य की गीर नस्ल की गाय इजरायली लोग ले गये हैं, जो संसार में सर्वाधिक दूध देती है। उसका गिनीज बुक में नाम है। हमें अपने गोपालकों का आत्मविश्वास बढ़ाना होगा और गोवंश की नस्ल सुधार कर गाय का दूध बढ़ाना होगा। इसके लिये पशुपालन विभाग के निदेशक, उपनिदेशक तथा अन्य दूसरे जानकार, विशेषकर सेवानिवृत अधिकारियों का सहयोग लेना पडेगा। भारत की गाय आठ–दस किलो दूध देने लगेगी, तो न केवल किसान बल्कि नगरवासी भी उसको चाव से पालेंगे।

- केवल गाय ही नहीं, उसकी संतान बैलों की नस्ल भी सधारनी होगी, ताकि हमको हष्ट–पुष्ट अधिक मेहनत कर सकने वाले, अधिक बोझ वहन करने वाले बैलों की प्राप्ति हो। सांड की नस्ल विशेषकर सुधारना आवश्यक है। जो गाय अधिक दूध देती है, उसी के बछड़े को सांड बनाना चाहिये और उसका बढ़िया पालन पोषण करना चाहिये। उसके द्वारा पैदा की गई गाएं अधिक दूध देंगी। यह क्रम लगातार करते जाने से भारत की गौएं संसार में सर्वाधिक दूध देने लगेंगी। भारत की गोवंश संतति पर हिन्दू समाज की गोत्र पद्धति लागू होती है। अतः एक ही सांड से जिससे कोई गाय गाभिन कराई जाए, उसकी बछड़ी उसी सांड से गाभिन न कराई जाए। सांडो की अदला–बदली करके उनको दूसरे स्थानों पर भेजना चाहिये, ताकि गोवंश का ह्रास न हो।
- चरागाहों की रक्षा की जानी चाहिये, जो चरागाहें अभी बचे हैं उनके वैकल्पिक उपयोग तुरन्त रोक देने चाहिए। वन विभाग भी चरागाहों का ठीक उपयोग नहीं कर पा रहा है। जिन चरागाहों पर गरीब लोगों के लिये मकान बन गये हैं या किसी अमीर आदमी की फैक्ट्री आदि बन गई है और जिसे हटाया नही जा सकता। उनके स्थान पर सरकार और धनी पुरूषों को अधिक चरागाह भूमि प्राप्त कराके चरागाहों की कमी को पूरा करना चाहिये। जिन वैकल्पिक उपयोगों से चरागाह भूमि छुडाई जा सकती है, उसको छुडाना चाहिये। भारतीय गोवंश के लिये चरागाह नितान्त आवश्यक है।

गोवंश रक्षण – मूलभूत सिद्धांतों में सम्मिलित हो :–

- गोवंश के रक्षण, पालन एवं संवर्धन का काम कुछ थोड़े समय में सम्पन्न होने वाला नहीं है। इसके लिये लगातार गोभक्तों द्वारा प्रयत्न की जाने की आवश्यकता है। साथ ही गोवंश रक्षण भारतीय संविधान में मूलभूत सिद्धांतो में सम्मिलित रखना बिल्कुल पर्याप्त नहीं है। गोवंश रक्षण को केन्द्रीय सरकार द्वारा पालन किये जाने वाले विषयों में सम्मिलित करना चाहिये। यदि यह किसी कारण अभी संभव न हो तो इसे सांझी/संयुक्त/समवर्ती (Concurrent) सूची में तुरन्त सम्मिलित कर लेना चाहिये, ताकि राज्य सरकारों के साथ साथ केन्द्रीय सरकार की भी गोरक्षण, पालन, संवर्धन की जिम्मेवारी हो जाए। आजकल से प्रस्तावित कराके केन्द्र सरकार को इसको मान्य करना चाहिये। साथ ही इस विषय को भारतीय जनता को तथा सरकारों को गम्भीरता से लेना चाहिये। ऐसा करने से कृषि प्रधान देश भारत का भविष्य उज्जवल होगा।

गौमाता की उपयोगिता

गौमूत्र

आयुर्वेद में आठ प्राणियों के मूत्र का औषधीय दृष्टि से वर्णन है। वे हैं भेड़, बकरी, गाय, भैंस, हाथी, घोडा, उंट और गधा। उन में से प्रथम चार प्राणी में नारी जाति का और शेष में नर जाति के मूत्र का उपयोग करना चाहिए और इसी के अनुसार ही गुणधर्म का वर्णन लिखा गया है। यहीं हम गौमूत्र के बारे में देखेंगे।

गौमूत्र अन्य सभी मूत्रों से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि आयुर्वेदिय साहित्य में स्पष्ट लिखा है कि जहॉ किस प्राणी का मूत्र लेना इसका उल्लेख न किया हो वहॉ गौमूत्र ही लेना चाहिए। विविध शास्त्रों में गौमूत्र का वर्णन इस प्रकार मिलता है –

मुताबिक चरक संहिता :– गोमूत्र मधुर और दोषों का शमन करने वाला तथा उदरकृमि, कुष्ठ–विविध चर्मरोग, सभी प्रकार के उदर रोग और खुजली आदि विकार का नाश करता है।

मुताबिक सुश्रुत संहिता :– गोमूत्र स्वचाद में तीखा और स्वभाव से गरम है। वह तीक्ष्ण, पचने में हल्का, वात–कफनाशक, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक और क्षार युक्त है। विरेचन के रूप में तथा ऐनीमा–वस्ति प्रयोग में उसका उपयोग बताया गया है। वह उदरशूल, जलोदर, कब्ज आदि रोगों का नाश करता है।

मुताबिक भावप्रकाश : – ग्रंथ में केवल गोमूत्र का ही विस्तृत और उपयोगी वर्णन मिलता है। इसमें भी गोमूत्र विषय पर ज्यादा महत्व देकर कहा गया है, कि गोमूत्र ही सर्वश्रेष्ठ है। औषधि उपयोग में जहां मूत्र शब्द में किसी प्राणी का उल्लेख न हो, गोमूत्र ही ग्रहण करना चाहिए। भावप्रकाश को छोड़कर अन्य किसी ग्रन्थकार ने इसे पवित्र नहीं बताया। उनके मत से गोमूत्र, स्वाद में तीखा कडुवा, तूरा और नमकीन है। स्वभाव से उष्ण और गुण से तीक्ष्ण है। दोषानुसार वह वात और कफ का शमन करने वाला तथा पित्तवर्धक है। विशेष वर्णन में इसे अग्निवर्धक पचने में हल्का, पवित्र और रसायन रूप माना है। इसमें क्षार अधिक है। गोमूत्र विविध प्रकार के चर्म रोग, मुख के रोग, नेत्र रोग, कृमि, विष तथा वायु और कफ जन्य रोगों का नाश करने वाला है। जिस रोगी का मूत्र रूक–रूक कर या जलनपूर्वक आता है उसमें गोमूत्र सेवन लाभकर है। तिल्ली (प्लीहा बढ़ जाना) तथा स्त्रियों के विविध रोगों का भी शमन करता है। कामला, पाण्डुरोग, सूजन, खॉसी, दमा, आतिसार, ऑव आदि रोगों में यह अच्छा कार्य करता है। कान में वेदना होती है, तो उसे भी मिटाता है।

मुताबिक आर्यभिषक एवं हिन्दुस्तान का वैद्यराज :– इस ग्रन्थ में गोमूत्र के विषय में वर्णन इस प्रकार किया गया है। गोमूत्र तूरा, कडूवा, तीखा, नमकीन, उष्ण–गरम, तीक्ष्ण, पाचक, अग्नि दीपक, मल का भेदन करने वाला, पित्त वर्धक, मेधा वर्धक, थोडा मधुर, मलसरण कराने वाला, लेखन (चिपके हुए मल रूप दोषों को उखाड कर बाहर निकालने वाला) कफ, वायु, कुष्ठरोग, गुल्म, उदर रोग, पाण्डु, श्वित्र (सफेद कोढ़), शूल, अर्श, कण्डु

खुजली, दमा, आम, भ्रम, ज्वर, आनाह, खॉसी, कब्ज सूजन, नेत्ररोग, त्वचा रोग, प्रदरादि स्त्री रोग, आतिसार तथा मूत्रावरोध (मूत्र का रूक जाना) इन सबका शमन करता है।

वनस्पति शास्त्री आचार्य श्री बापालाल भाई वैद्य – इन्होंने अपने द्रव्यगुण शास्त्र में गोमूत्र के बारे में लिखा है कि यह थोड़ा मधुर, दोषघ्र, कृमिघ्र, कुष्ठघ्र और कण्डूहर है उदर रोग में उत्तम है। साध्य विकारों में गोमूत्र ही लेना चाहिए।

गौमूत्र का उपयोग

गाय के मूत्र में कार्बोलिक एसीड होता है, जो कीटाणुनाशक है। अतःशुद्धि और स्वच्छता बढ़ाता है। प्राचीनों ने इस दृष्टि से ही इसे पवित्र कहा होगा। आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र में नाइट्रोजन, फोस्फेट, यूरिया, यूरीक, एसीड, पोटेश्यिम और सोडियम होता है। जिन महिनों में गाय दूध देती है, उस वक्त गोमूत्र में लेकटोज़ रहता है।, जो ह्रदय और मस्तिष्क के विकारों में बहुत हितकारी है।

गोमूत्र सेवन के लिए जो गाय रखी जाती है वह निरोगी, और युवा होनी चाहिए। जंगल क्षेत्र और चट्टानें जहां गायो को प्राकृतिक वनस्पति खाद्य रूपों में मिल सके, वहां की गायों का मूत्र अधिक अच्छा है। गोमूत्र को स्वच्छ वस्त्र से छानकर सुबह में खाली पेट पीना चाहिए। स्तनपान करने वाले बच्चों को गोमूत्र देते समय मां को भी गोमूत्र देना चाहिए। मासिक धर्म के दौरान स्त्रियों को गोमूत्र पान से शांति और शक्ति मिलती है। सामान्यतः युवा व्यक्ति एक छटांक से एकपाव मात्रा में गोमूत्र सेवन कर सकते हैं।

विभिन्न रोगों में इस प्रकार करें –

1. कब्ज रोगी को उदरशुद्धि के लिए गोमूत्र को अधिक से अधिक बार कपडे से छानकर पीना चाहिए।
2. गोमूत्र में हरड चूर्ण भिगोकर धीमी ऑच से गरम करना चाहिए। जलीय भाग जल जाने पर इसका चूर्ण उपयोग में लिया जाता है। गोमूत्र का सीधा सेवन जो नहीं कर सकता है उसे इस हरडे का सेवन करने से गोमूत्र का लाभ मिल सकता है।
3. जीर्णज्वर, पाण्डू, सूजन आदि में कडू किरायते के गरम पानी के उकाले में गोमूत्र मिलाकर, सात दिन तक सुबह और शाम पीना चाहिए।
4. मूत्र का अवरोध होने पर एक छटांक पानी में 2 तोला गोमूत्र मिलाकर पीना चाहिए।
5. खॉसी, दमा, जुकाम, आदि कफ विकारों में गोमूत्र सीधा ही प्रयोग में लाने से तुरंत ही कफ निकलकर विकार शमन होता है।
6. पाण्डु रोग में हर रोज सुबह खाली पेट, और स्वच्छ गोमूत्र कपड़े से छानकर नियमित पीने से 1 मास में अवश्य लाभ होता है।

7. बच्चों को खोखला रोग होने पर गोमूत्र को छानकर उस में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।
8. उदर के किसी भी रोग मे ंगोमूत्र पान से लाभ होता है।
9. जलोदर में रोगी केवल गोदूध सेवन करें और साथ साथ गोमूत्र में शहद मिलाकर नियमित पीना चाहिए।
10. चरक के मतानुसार लोहे के बारीक चूर्ण को गोमूत्र में भिगोकर इस का दूध के साथ सेवन करने से पाण्डुरोग में जल्दी लाभ होता है।
11. शरीर की सूजन में केवल दूध पीकर साथ में गोमूत्र सेवन करना चाहिए।
12. गोमूत्र में नमक और शक्कर समान भाग मिलाकर सेवन करने से उदर रोग का शमन होता है।
13. गोमूत्र में सैंधा नमक और राई का चूर्ण मिलाकर पीने से उदर रोग मिटता है।
14. ऑखों की जलन, कब्ज, शरीर, में सुस्ती और अरूचि में गोमूत्र में शक्कर मिलकार लेना चाहिए।
15. खाज, फुन्सियॉ, विचर्चीका होने पर गोमूत्र में ऑबा हल्दी चूर्ण मिलाकर पीना चाहिए।
16. प्रसुति के बाद सुवा रोग में स्त्री को गोमूत्र पिलाने से अच्छा लाभ होता है।
17. चर्म रोगों में हरताल, बाकुची तथा मालकांगनी को गोमूत्र में भिगोकर सोगठी बनाकर इसे दुषित त्वचा पर लगाना चाहिए।
18. सफेद कुष्ठ में बावची के बीज को गोमूत्र में अच्छी तरह पीस कर लेप करना चाहिए।
19. कान में वेदना आदि विकारों में गोमूत्र को गर्म करके 4/5 बूंद कान में डालना चाहिए।
20. शरीर में खुजली होने पर गोमूत्र की मालिश और गोमूत्र स्नान करने से चर्मरोग मिटते हैं।
21. कृष्ण जीरक को गोमूत्र मे पीसकर इसका शरीर पर मालीश और गोमूत्र स्नान करने से चर्मरोग मिटते हैं।
22. ईंट को खूब तपाकर गोमूत्र में उसे बुझा कर, कपड़े में लपेटकर यकृत और प्लीहा (तिल्ली) की सूजन पर शेक करने से लाभ होता है।
23. कृमि रोग में डीकामाली का चूर्ण गोमूत्र के साथ देना चाहिए।
24. सुवर्ण, लोह वत्सनाभ, कुचला आदि का शोधन करने के लिए और भस्म बनाने के लिए औषध निर्माण में गोमूत्र का उपयोग होता है। वह विषैले द्रव्यों का विष प्रभाव नष्ट करता है। शिलाजीत की शुद्धि भी गोमूत्र से होती है।
25. चर्म रोगी में उपयोगी महामरिच्यादि तेल और पंचगव्य घृत बनाने में गोमूत्र उपयोग में लाया जाता है।
26. हाथीपॉव (फाइलेरिया) रोग में गोमूत्र के साथ खादिराधि का चूर्ण, सुबह खाली पेट लेने से मिट जाता है।

27. गोमूत्र का क्षार उदर वेदना में, मूत्ररोध में तथा वायु का अनुमोलन करने के लिए दिया जाता है।
28. गोमूत्र सिर में अच्छी तहर मल कर–लगाकर थोडी देर तक रखना चाहिए। सूखने के बाद बाल धोने से सुंदर होते हैं।
29. कामला रोग में गोमूत्र अतीव उपयोगी है।
30. गोमूत्र में पुराना गुड और हल्दी चूर्ण मिलाकर पीने से दाद, कुष्ठरोग, ओर हाथीपॉव में लाभ होता है।
31. गोमूत्र के साथ एरंड तेल एक मास तक पीने से संधिवात और अन्य वात विकार नष्ट होते हैं।
32. बच्चों को उदर वेदना तथा पेट फूलने पर एक चमच गोमूत्र में थोडा नमक मिलाकर पिलाना चाहिए।
33. बच्चों को सूखा रोग होने पर एक मास तक, सुबह और शाम गोमूत्र में केशर मिलाकर पिलाना चाहिए।
34. शरीर में खाज–खुजली हो, तो गोमूत्र में नीम के पत्ते पीसकर लगाना चाहिए।
35. गोमूत्र के नियमित सेवन से शरीर में स्फूर्ति रहती है, भूख बढ़ती है ओर रक्त का दबाव स्वभाविक होने लगता है।
36. क्षय के रोगी को गोबर और गोमूत्र के गंध से क्षय के जन्तु का नाश होने से अच्छा लाभ होता है। अतः रोगी को गौशाला में रखें और उसकी खाट को गोमूत्र से बराबर धोना चाहिए।

गौमूत्र से नष्ट होने वाले रोग

1.	अग्निमांध्य	2.	अजिर्ण
3.	अतिसार (दस्त)	4.	अन्त्रवृद्धि
5.	अम्लपित्त (एसीडीटी)	6.	अन्त्रवृद्धि शोथ (एपेंटीसाटीस)
7.	अंतस्त्राव ग्रंथि विकृति	8.	अन्त्रपुच्छ प्रदाह (ॲपेन्डीक्स)
9.	अपस्मार (मिर्गी)	10.	भ्रम (चक्कर आना)
11.	आरोचक	12.	अर्बुद (Tumour)
13.	अर्श (बवासीर) (Piles)	14.	अष्टीला (Prostate)
15.	अश्मरी	16.	अस्थिभंग
17.	प्रमेह (Diabetes)	18.	अहिफेन विष
19.	आध्यान (आफरा)	20.	आनाह (बद्धकोष्ठता)
21.	आमावत	22.	आमशय व्रण
23.	उदर रोग	24.	उदावर्त (गैस)
24.	लू लगना (Sun Stroke)	26.	प्रमेह पीडिका

27. प्रवाहिका (Dysentry)
28. पाण्डु (Anemia)
29. पामा (खुजली) (Eczyma)
30. पित्त वृद्धि
31. प्लीहा वृद्धि
32. बद्ध कोष्ठ
33. बहुमूत्र
34. मदात्यय (Alchohalism)
35 मसूरीका (रोमान्तिका)
36. मुखरोग
37. मूर्च्छा (Un Consiounsess)
38. मूत्र कृच्छ
39. मूत्र वाहिनीमें व्रण
40. मेदो वृद्धि
41. यकृत वृद्धि (Liver)
42. रक्त दबाव (HBP High Blood Pressure)
43. रक्त पित्त
44. रक्त विकार
45. उन्माद
46. उपदंश
47. उरतोय
48. उरस्तम्भ
49. कण्ठ रोग
50. कब्ज
51. कुष्ठरोग (Leprosy)
51. कर्णरोग (Ear Diseases)
53. कृमि (Worms)
54. कामला (Jaundice)
55. कफ (Cough)
56. गुल्म
57. दाह
58. वमन करना
59. विरेचन देना
60. बाल रोग
61. बुद्धिमान्ध्य (स्मृति नाश)
61. भगन्दर
63. भस्मक
64. दंतरोग
65. दाद (Ring Worm)
66. धातुक्षीणता (Sex Debityly)
67. निद्रानाश
68. नासारोग (Nosal Diseases)
69. नेत्ररोग (Eye Diseases)
70. पलित (बाल सफेद होना)
71. प्रतिशाय (जुकाम)
72. रक्तस्त्राव
73. वमन (Vomiting)
74. वातरोग
75. वातरक्त
76. विचर्चिका (Eczyma)
77. विद्रधि
78. विष विकार
79. विसूचिका (हैजा)
80. विसर्प (विस्फोट)

81. ज्वर (Fever)
81. वृक्क विकार (Kidney Diseases)
83. ज्वारातिसार
84. तृषा
85. त्वचारोग (Skin Diseases)
86. विविध व्रण
87. शिरःशूल
88. सोथ (सूजन)
89. श्लीपद (हाथी पॉव)
90. श्वास (दमा) (Asthama)
91. सन्नीपात
92. संगृहणि
93. सेंद्रीय विष वृद्धि
94. सुजाक
95. स्नायु विकृति
96. स्त्रीरोग
97. स्नायुक (नारू)
98. स्तन रोग
99. हलीमक
100. हारीद्रक
101. हिवका
102. हिस्टीरिया
103. ह्रदय रोग
104. जलोदर

गौमूत्र में वह शक्ति है जिससे अनेकों रोग उसके सेवन से स्वयंमेव नष्ट हो जाते हैं। यदि देशी शुद्ध नस्ल की गाय का गोमूत्र उपलब्ध नहीं हो तो उसके स्थान पर गोमूत्र की वटी व गोमूत्र का अर्क का उपयोग करना चाहिए।

गौमूत्र से रोगों पर विजय

गोमूत्र के नव्य रसायन शास्त्र मतानुसार तत्वों का रोगों पर लाभ तालिका –

क्र.सं.	तत्व का नाम	अंग्रेजी फार्मूला	रोग नाशक प्रभाव
01	नाइट्रोजन (Nitrogen)	नत्रजन (N_2)	मूत्रल, वृक्क का प्राकृतिक उत्तेजक, रक्त विषमता को निकालता है।
02	सल्फर (Sulphur)	गंधक (S)	इसे बड़ी आन्त की पुरः सरण क्रिया को बल मिलता है। रक्त शोधक है।
03	अमोनिया (Ammonia)	अमोनिया (Nh_3)	यह शरीर धातुओं और रक्त संगठन को स्थिर करता है।
04	अमोनिया (Ammonia Gas)	अमोनिया (Nh_3)	गैस फेफड़ों व अंगों को संक्रमण से रोकता है।

05	कॉपर (Copper)	ताम्र (Cu)	शरीर की जीवाणुओं से रक्षा करता है। अनुचित भेद या उभार को बनने से रोकता है।
06	आयरन (Iron)	लोह (Fe)	रक्त में उचित लाल कणों का निर्माण बनायें रखता है, कार्य शक्ति, स्थिर रखता है।
07	यूरिया (Urea)	यूरिया ($Co(NH_2)$	मूत्र के उत्सर्ग पर प्रभाव करता है। किटाणु नाशक है।
08	यूरिक (Uric Acid)	यूरिक एसिड ($C_5H_4N_4O_3$) Drops	शौफ (विभिन्न) प्रकार का नाशक /हृदय शोफ नाशक, मुत्रल होने से विष शोधक है।
09	फास्पेट (Phosphate)	फास्पेट (P)	मूत्रवाही संस्थान से सिकता कण निकालने में सहायक है।
10	सोडीयम (Sodium)	सोडीयम (Na)	रक्त शोधक, अम्लता नाशक है। Anti Acid है।
11	पोटेशियम (Potassium)	पोटेशियम (K)	कौटोम्बिक सावधि अगवात नाशक क्षुधा कारक है। पेशी दौर्बल्य, आलस्य मिटाता है।
12	मैगनीज (Manganese)	मैगनीज (Mn)	कीटाणुनाशक, किटाणु बनने से रोकना, गेंगरीन सडांघ, से बचाता है।
13	कार्बोलिक एसिड (Corbolic Acid)	कार्बोलिए एसिड (HCOH)	कीटाणुनाशक, किटाणु बनने से रोकना गेंगरीन सडांघ, से बचाता है।
14	कैल्शियम (Calcium)	खटिक (Ca)	रक्त शोधक, अस्थिपोशक, जन्तुध्न, रक्त स्कन्दक है।
15	साल्ट (Solt)	लवण (NaCL)	दूषित व्रण, नाडी व्रण, मधुमेह जन्म, सन्यास, विषं रक्तता अम्लरक्तता, जन्तुध्न

16	विटामीन विटामिन बी (ए,बी,सी,डी,ई)	(Vitamin A,B,C,D,E,) (Vitamin B)	जीवनीय तत्व, उत्साह–स्फुर्ती बनाये रखना घबराहट, प्यास से बचाता है। अस्थीपोशक, प्रजनन शक्ति दाता।
17	अन्य मिनरल्स् अन्य खनिज	(Other Minerals)	रोग विरोधनी शक्ति को बढ़ाता है।
18	लेक्टोज (Lactose)	दुग्ध शर्करा ($C_6H_{12}O_6$)	तृप्ती रहती है। मुख शोष, प्यास, घबराहट मिटाता हैं। ह्रदय को फायदेमंद
19	एन्जाइम्स	(Enzyms)	आरोग्य कारक पाचक रस बनाते, रोग प्रति रोधनी (तत्व) शक्ति बढ़ाते हैं।
20	वॉटर (Water)	जल (H_2O)	जीवनदाता है, रक्त को तरल बनाए रखता है। ताप क्रम को स्थिर रखता है।
21	हिप्युरिक एसिड (Hipuric Acid)	हिप्युरीक एसिड (Cg Ng NOx)	मूत्र के द्वारा विषों को बाहर निकालता है।
22	क्रिएटिनिन (Creatinin)	क्रिएटिनिन ($C_4H_gN_{22}O_2$)	जन्तुध्न है।
23	आठ मास की गर्भवती गाय के मूत्र में हार्मोंस भी होते हैं, जो स्वास्थवर्धक है।		
24	स्वर्णक्षार आरम हाईड्रा ऑक्साईड (Aurium-Hydra-Oxide)	(Au OH)	जन्तुध्न, रोग निरोधक शक्ति दाता (Immunity Power) बढ़ाता है। (Highly Antibiotic) विषनाशक, Antitoxin है।

कैंसर को नष्ट करता है गाय का दूध

गाय के दूध के महत्व पर हमारे धर्मशास्त्रों तथा आयुर्वेद संबंधी ग्रंथों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। गोदुग्ध को साक्षात ''अमृतमय पेय'' बताया गया है। हाल ही में वैज्ञानिकों ने शोध के बाद निष्कर्ष निकाला है कि गाय के दूध में कैंसर रोधक तत्व होते है।

जैसा कि सर्वविदित है कि कैंसर एक अत्यन्त ही घातक बीमारी है। पिछले लगभग 25 वर्षो में कैंसर के कारणों व उसके उपचार तथा रोकथाम आदि सभी विषयों पर बहुत मात्रा में अनुसंधान कार्यो के आधार पर कैंसर के कारण शरीर में कोशिकीय स्तर पर होने वाले परिवर्तनों तथा जैविक व रासायनिक क्रियाओं की अनेकों

नई–नई जानकारियां मिलती है। साथ ही कैंसर के उपचार के लिए शल्य चिकित्सा, कीमौथैरपी तथा विकिरण जैसी अनकों तकनीकियों पर भी अनेकों शोध हुए हैं तथा उनमें भी अभूतपूर्व सुधार हुए हैं। इन सभी आधुनिक खोजों, जानकारियों तथा उपचार की तकनीकियों के कारण कैंसर से होने वाली मृत्यु दर में काफी कमी आई है। इसके बावजूद फेफड़ों, छाती, अग्नाशय, आंत, प्रोस्टेट तथा मूत्राशय से पीडित कैंसर मरीजों की स्थिति में विशेष अन्तर नहीं आया है। नवीन शोधों के आधार पर वैज्ञानिकों द्वारा यह माना जाने लगा है, कि इस प्रकार के कैंसरों के लिए उपचार की अपेक्षा रोकथाम की उपाय करना अधिक कारगर सिद्ध हो सकता है। वैज्ञानिकों ने इस प्रकार के कैंसरों की रोकथाम के लिए खोजे गए विभिन्न संभव उपायों में मनुष्य की आहार व्यवस्था को अत्यन्त महत्वपूर्ण पाया गया है।

इसी क्रम में विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा किए गये अनुसंधानों में यह भी पाया गया है, कि गाय के दूध में उपस्थित वसा में अनेकों कैंसर रोधी तत्व पाए जाते हैं। इनमें से एक प्रमुख पदार्थ कन्जूगेटिड लिनोलिक अम्लीय (सी एल ए) योगिक है। एक शोध के अनुसार इन सी एल ए योगिकों की गाय के दूध की मात्रा 8.6 से 100 माइक्रोमोल प्रतीग्राम तक पाई जाती है। यद्यपि कन्जूगेटिड लिनोलिक अम्लीय यौगिक प्रकृति, प्रदत्त अनेको खाद्य पदार्थो में पाए जाते हैं, लेकिन इनकी मात्रा गाय के दूध में सबसे अधिक पाई जाती है। यह भी पाया गया है, कि ग्रीष्म ऋतु में दूध से सी एल ए योगिक की मात्रा हरे–भरे जंगलों व चारागाहों में चरने वाली गायों के दूध में अपेक्षाकृत 2 से 3 गुना अधिक पाई गई है।

सी एल ए यौगिकों को आहार में मिलाकर उनका कैंसर रोधी प्रभाव पर विभिन्न वैज्ञानिकों ने अनेकों प्रयोग व अध्ययन किए हैं। इसी प्रकार के एक प्रयोग में चूहों पर सी एल ए यौगिाकों का प्रभाव देखा गया है। उनमें रसायनों द्वारा जनित पेट के कैंसर को रोकने में सी एल ए योगिक सक्षम पाए गए। इसी तरह एक अन्य प्रयोग में चूहों में बड़ी आंत कें कैंसर को रोकने में भी सी. एल. ए. यौगिक बहुत ही उपयोगी पाए गए। (लियू इत्यादि, 1995) एक अन्य प्रयोग में (इपा इत्यादि, 1991) वैज्ञानिकों ने सी एल ए योगिक को कैंसर पैदा करने वाले रसायनों से दो सप्ताह पूर्व से देना शुरू कर दिया तथा पाया कि आहार में सी एल ए देने से स्तन के कैंसर में महत्वपूर्ण कमी आई इस तरह के अनेकों प्रयोग विश्वभर के विज्ञानिकों द्वारा किए गए है। तथा वर्तमान में भी किए जा रहें है। तथा इन सभी प्रयोगों के परिणाम यही सिद्ध करते हैं, कि यदि हम आहार में सी एल ए तत्वों का नियमित सेवन करें तों कैंसर से बचाव किया जा सकता है।

जैसे कि ऊपर वर्णन किया गया है कि गाय के दूध में सी एल ए यौगिक बहुतायत में होते हैं। वैज्ञानिकों ने गाय के दूध के सेवन की कैंसर को रोकने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका पाई है। इस पर अनेकों देशों में विभिन्न वैज्ञानिकों ने कार्य किया है। इन अध्ययनों के परिणाम काफी उत्साहजनक पाए गए हैं। इस प्रकार

के एक अध्ययन में पाया गया है, कि मनुष्य के रक्त में इन कैंसर रोधी तत्वों (सी एल ए) की मात्रा गाय के दूध के सेवन से स्वभाविक रूप से बढ़ने लगती है।

आस्ट्रेलिया में किए गए एक अध्ययन में कुछ चौकाने वाले तत्थ निकलकर आए हैं। वहां पर माताओं के दूध में सी एल ए की मात्रा केवल लगभग 20.7 माइक्रोमोल प्रतिग्राम थी। हरे कृष्णा पंथ को मानने वाली महिलाओं के दूध में सी एल ए तत्वों की मात्रा लगभग 40 माइक्रोमोल प्रति ग्राम पाई गई। इसका प्रमुख कारण हरे कृष्णा पंत को मानने वाले समुदाय द्वारा भोजन में गाय के दूध, घी व मक्खन का अधिकाधिक प्रयोग पाया गया। उक्त अनुसंधानों के आधार पर वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला, कि यदि हम अपने आहार में गाय के दूध, घी व मक्खन का नियमित प्रयोग करें, तो हम कैंसर जैसी खतरनाक बिमारियों से बचने में अधिक सफल हो सकते हैं।

उपरोक्त तथ्यपरक उद्धकरणों से अब वैज्ञानिकों को भी सोचने को मजबर होना पड़ेगा कि गोदुग्ध से लेकर गोमुत्र तक का हमारे स्वास्थ्य के लिए कितना अनुठा योगदान एवं गुण विद्यमान है। ऐसी स्थिति में गोवंश की रक्षा के लिए सभी को राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास करने चाहिए।

गोक्षीर क्षीरणाम् श्रेष्ठः

गाय के दूध को श्रेष्ठ माना गया है। हमारे पूर्वज गाय के दूध का ही सेवन करते थे। आज भी डेनमार्क और न्यूजीलेन्ड जैसे देश जो दूध के मामले में काफी आगे बढ़े हुए हैं। वहां गाय के दूध का ही अधिक प्रचार है। इस का कारण यह है कि गाय का दूध आयुष्यवर्धक और शरीर को बल देने वाला है। माता के दूध को छोडकर अन्य सभी दूध में गाय का दूध सात्विक माना गया है। वह बलवर्धक, बुद्धि–मेघावर्धक , श्रमहर, और आरोग्यप्रद है। वह दमा–खॉसी, तृषा–भूख और रक्तपित का शमन करता है। बालक को माता का दूध बंद करने के बाद गाय का दूध ही देना चाहिए। वृद्धों के लिए भी वह उत्तम है, क्योंकि यह पचने में हल्का है।

चरकसंहिता के सूत्रस्थान अध्याय 25 में श्रेष्ठ द्रव्यों का निर्देश को अन्य सभी दूध से गाय के दूध को श्रेष्ठ बताया है। (गोक्षीर क्षीरणाम् श्रेष्ठः) और आठ प्रकार के दूध गिनाये हैं। उसमें गाय के दूध का उल्लेख सर्वप्रथम है। आगे स्पष्टरूप से लिखा है, कि जहां सिर्फ दूध शब्द लिखा हो वहां गोदूध ही लेना चाहिए।

महर्षि सुश्रृत ने कहा है कि गाय का दूध अभिष्यदीय नहीं है, याने वह रसवाहीनि नलिका और काम से अवरूद्ध नहीं करता। गोदूध स्निग्ध, गुरू और रसायन गुण युक्त है और रक्तपित का नाश करता है। वह शीत तथा रस और विपाक में मधुर है। जीवन के लिए अतीव हितकारी है, वायु और पित्त और अत्यंत शमन करता है।

भावप्रकाश में गोदूध की खूब प्रशंसा है। वह रस और विपाक में मधुर, शीतल, स्तन्यवर्धक, वायु–पित्त तथा रक्त संबंधित रोगों या वात प्रधान रक्तपित्त को दूर करने वाला, दोष, धातु और मल तथा नाडियों को कुछ आद्र करता है। इसका सेवन करने से वृद्धावस्था तथा समस्त रोगों का प्रतिकार करता है (जरा समस्त रोगाणां शान्तिकृत सेवीनां संदा)।

गाय का दूध दोहने के बाद ठंडा होने पर पीना नहीं चाहिए, लेकिन बाद में गरम कर के पी सकते हैं। इस से वह पचने में हल्का होता है और कामशक्ति वर्धक ज्वरनाशक, वायु–पित्त और कफ का शमन करने वाला होता है, इस दूध की झाग–फेन तीनों दोषों की शमन, रूचि बढाने वाली, बलवर्धक, अग्निप्रदीपक, और तृप्ति कर होती है। अतिसार, अग्रिमांद्य और जीर्णज्वर में अतीव हितकारी है।

गाय का दूध संपूर्ण आहार

गोदूग्ध को संपूर्ण आहार कहा जाए तो इस में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि बरसों तक केवल गोदूध पीकर ही जीवन व्यतीत करते थे। साथ में फलादि भी खाते थे। यानि अनाज के बिना चला लेते थे। गोदूध संपूर्ण आहार है, यह इसका प्रमाण है।

कुछ लोगों का कहना है, कि पहले भैंस थी ही नहीं, इसीलिए गाय को महत्व दिया गया। अब भैंस अच्छा दूध देती है, तो गाय की इतनी अनिवार्यता क्यों ? यह तर्क बेबुनियाद है। वेदकालिन साहित्य में भैंस के दूध का निर्देश नहीं हैं, किन्तु आयुर्वेद में इस का उल्लेख अवश्य है। भैंस का दूध, दही, मूत्र आदि का वर्णन है। भैंस के दूध को भारी, तामसी और अभिष्यन्दी बताया है, जबकि गोदूध का परमपथ्य और जीवन के लिए हितकारी कहा है।

आजकल हम जो गाय और गोदूध देख रहे हैं, उसमें यह बात नहीं है। आज दूध की दूकानों में गाय का दूध का बोर्ड लगाकर जो दूध बेचा जाता है, वह तो भैंस के दूध की विभाजन प्रक्रिया (सेपरेशन) द्वारा उस में स्नेहांश–फैट की मात्रा अलग कर के उस में पानी मिलाकर हल्के किस्म का दूध होता है। इसे देखकर गोदूध की कल्पना–विश्वास करना गलत है। पंरतु मालेगांव, जलगांव, अकोला, कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर और गुजरात, राजस्थान व अन्य राज्यों में उत्तम प्रकार की गौशालाएं हैं, और वहां का गोदूध देखो और ताजा दूध पीने से खयाल आता है, कि अमृत इससे अलग हो सकता है क्या ? विदेशों में स्वच्छता की पूरी सावधानी से तन्दुरस्त गायें पाली जाती हैं और व भैंस से भी अधिक मात्रा में और अच्छा दूध देती है।

सांप्रत विज्ञान की दृष्टि से देखा जाय तो गाय के दूध में शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व मौजूद है। सामान्य रूपसे बीना पानी मिलाये हुए गोदूध में 13 प्रतिशत घन पदार्थ होता है। शेष भाग जलीयांश है। इस 13 प्रतिशत घन भाग में निम्नतःतत्वों का प्रमाण बताया गया है।

प्रोटीन	– 3 से 4 प्रतिशत	चरबी	– 3 से 4 प्रतिशत
शक्कर	– 4 से 5 प्रतिशत	क्षार	– 1/2 प्रतिशत
खनिज	– 1/2 प्रतिशत	विटामिन	– 1/2 प्रतिशत

गाय के दूध में केल्शियम, मेग्नेश्यम, सोडियम, पोटेश्यम, क्लोरीन, आर्यन (लोहा) कोपर (ताम्र) आयोडीन और सल्फर आदि खनिज तत्व है। विटामिन ए, बी, सी, डी, ई और के इसमें है। विटामिन बी, के 1, 2 आदि प्रकार भी योग्य प्रमाण मे होते हैं। बालक, वृद्ध, सगर्भा स्त्री, बिमार और दुर्बल व्यक्ति के लिए आवश्यक मात्रा में पोषक तत्व मिल सकते हैं।

अन्य गोरस–

दही :– यह विशेष रूप से मीठा, खट्टा, रोचक, अग्रि प्रदीपक, पवित्र, ह्रदय के लिए हितकारी, पुष्टि करनेवाला और वायु शामन है। सभी प्रकार के दही में गाय का दही अधिक गुणयुक्त होता है।

छाछ (तक्र) :– दस्त – अतिसार रोकने वाली, खटटी, तूरी, मीठी, पचने में हल्की, गर्म अग्निवर्धक, वात शामक, तृप्तिदायक और पथ्य है।

मक्खन :– हितकारी, मैथुन शक्ति बढ़ाने वाला, विविध रोगनाशक, बलवर्धक , अग्निप्रदीपक, अतिसार शामक, वायु–पित्त और रक्त के विकार, रक्तपित्त, अर्श, मुँह का लकवा और खॉसी में लाभदायी हे। बालक और वृद्धों के लिए मक्खन अमृत समान गुणकारी है।

घी :– यह ऑखों के लिए परम हितकारी, कामशक्तिवर्धक, अग्निप्रदिपक, पचने पर मधुर रसवाला, त्रिदोष शामक, शीत, बुद्धि – कांति – लावण्य – शक्ति – बल और तेजोवर्धक है। यह यौवन को स्थिर बनाये रखनेवाला बलदायक, पवित्र आयुष्यवर्धक रसायन है और अशुभ तत्व – पाप – राक्षसों का नाश करनेवाला, मंगलकारी, सुगन्धी और अन्य दूसरे घी से अधिक गुणकारी है।

ह्रदय हितकारी है गो दूग्ध

गोदूग्ध का एक गुण ''ह्रदय के लिए हितकारी है'' इसके बारे में और देखें। ह्रदय रोग के विशेषज्ञ विदेशी डाक्टरों ने विविध प्रायोगिक परीक्षण करने पर इस नतीजे पर पहुॅचे हैं कि गाय का दूध ह्रदय रोग के लिए अमृत समान हितकारी है। इसका कारण बताते हुए कहा गया है, कि गाय के दूध में भैंस के दूध की तुलना में चरबी कम है और विशेष करके गोदूध में ओरोटीक एसीड का प्रमाण सब से ज्यादा है। जिनको ह्रदय रोग होने की शक्यता ज्यादा है या जिन रोगियों की ह्रदय की शल्य क्रिया–बायपास सर्जरी की गई हो, उसके तुरंत बाद देशी गाय का दूध पिलाना सर्वोत्तम है। उसमें रहा ओरीटीक एसीड नामक तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका है। ह्रदय के स्नायुओं को तनाव, दबाव, की स्थिति में सह तत्व आवश्यक प्रोटीन की मात्रा बढ़ाकर ह्रदय के

लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है। औस्ट्रेलिया और रशिया के वैज्ञानिकों ने क्रमशः कुत्तों और चूहों पर इस ओरीटीक एसीड के प्रायोगिक परीक्षण किये और आशास्पद परीणाम पाये हैं। शल्य क्रिया के उपरान्त इस दृष्टि से गाय का दूध ह्रदय रोगी में शीघ्र सुधार लाकर शेष जीवन में स्थिरता और स्वस्थ्ता देता है।

औषधीय उपयोग

गाय के गोरस के थोडे घरेलू और सरल औषधीय उपयोग यहॉ बताये गये हैं, जो हर कोई इस्तेमाल कर सकता है।

1. गाय का दूध सुपाच्य और पोषक है। दुर्बल, कृश, बिमार, वृद्ध और बालकों के लिए हितकर है। वह शरीर की सातों धातुओं को शीघ्र बढ़ाता है।
2. गाय का दूध शीतल है, अतः पित्त विकारों मे बहुत लाभदायी है। अम्लपित्त (अेसीडीटी, अल्सर, दाह, शरीर में अधिक गरमी आदि में) गाय का दूध उत्तम है।
3. जलोदर के रोगी को पानी पीना सख्त मना है। इस का रोगी सिर्फ गाय का दूध पीकर रहे तो रोग में अच्छा लाभ होता है।
4. ऑख में पाक होने का (ऑख आना) दूध की पट्टी रखनी चाहिए। इससे ऑख में दाह, वेदना, सूजन शांत हो जाती है।
5. दूध का मावा, मीठाईयॉ, दूधपाक आदि पोष्टिक हैं। वह धातुवर्धक, वीर्यवर्धक और क्रांतिवर्धक है।
6. गोदूध की बनाई छाछ और दही भी पोष्टिक है। इन दोनों के नित्य सेवन से असाधारण आरोग्य लाभ मिलता है।
7. दस्त, पेचीस (आंव के साथ दस्त आना), ग्रहणी, अर्श आदि में छाछ या दही लेने पर अन्य औषधों की आवश्यकता कम रहती है।
8. शरीर के किसी भी अंग में से रक्तस्त्राव होता हो, गोदूग्ध में शक्कर मिला कर पीना चाहिए। नाक में से मल मार्ग से या बवासीर के कारण रक्त आता हो तब यह बहुत अच्छा लाभ देता है।
9. गाय के घी की उपयोगिता के बारे में जितना भी कहा जाय, कम है। गाय के घी का नित्य सेवन करने वाला व्यक्ति दीर्घायु और नित्य निरोगी रहता है। इस से रोग प्रतिकार शक्ति बनी रहती है।
10. ऑख का तेज बढ़ाने और बनाये रखने के लिए गाय के घी का सेवन करना चाहिए और अंजन भी करना–चाहिए।
11. शिरःशूल होने पर गाय के घी को गरम करके नाक में इस की 2 से 4 बूंद डालनी चाहिए चाहिए।
12. पेट में अल्सर (घाव) हो तब गोघृत के सेवन से शिघ्र लाभ होता है।

13. कब्ज के मरीज को रात में सोते समय दूध में 9 चम्मच घी डालकर गरम ही पी लेना चाहिए।
14. क्षय के रोगियों के लिए गया का दूध और घी बहुत लाभदायी है।
15. छोटे बच्चों को गर्मी के दिनों में छोटी छोटी फुन्सियॉ निकलती हैं, उस वक्त गाय के घी का मालीश करना चाहिए।
16. ऑख में बारिक रजकण या छिलका गिरा हो तब ऑख में गाय के दूध की धारा करने से वह निकल जाता है।

इति